शेख़ फ़रीद – सबद ११६
ढूढेदीए सुहाग कू तउ तनि काई कोर ॥
सलोक, सेख फरीद, गुरु ग्रंथ साहिब, १३८४

ढूढेदीए सुहाग कू तउ तनि काई कोर ॥
जिन्हा नाउ सुहागणी तिन्हा झाक न होर ॥११४॥

सार: आध्यात्मिक मिलन में आने वाली बाधाओं की जाँच करने पर पता चलता है कि आंतरिक संघर्ष बड़ी रुकावट रहती है। ज्ञान के सार को खोजने की यात्रा अक्सर अपनी अंतरात्मा में ईमानदारी की कमी के कारण लड़खड़ा जाती है। यह मानसिक द्वंद्व वास्तविकता से अलग कर देता है लेकिन एकत्व पर अडिग ध्यान केंद्रित करके इसे दूर किया जा सकता है। इन चुनौतियों का सामना करके, साधक गहन और अधिक सार्थक आध्यात्मिक संतोष की ओर परिवर्तन आरंभ कर सकते हैं।

ढूढेदीए सुहाग कू तउ तनि काई कोर ॥
प्रिय मिलन की चाह रखते हुए भी, तुम्हारे अस्तित्व में अब भी किस चीज़ की कमी है? इसका अर्थ यह है कि जब तक स्वयं सच्चा नहीं होता तब तक आंतरिक पूर्णता की खोज आगे नहीं बढ़ सकती।

जिन्हा नाउ सुहागणी तिन्हा झाक न होर ॥११४॥
उन्हें ही सौभाग्यशाली रूप से मिलित कहा जाता है जो किसी तरफ़ नज़र नहीं डालते। यह उस आंतरिक मिलन को दर्शाता है जिसमें द्वैत की भावना मिट जाती है। (११४)

तत्त्व: शेख़ फ़रीद सत्य के प्रति अटूट निष्ठा की अनिवार्य भूमिका पर बल देते हैं। सत्यनिष्ठा के प्रति स्वयं को समर्पित करके, हम द्वैत के कारण उत्पन्न हुई दूरियों को पाट सकते हैं और एकता की भावना विकसित कर सकते हैं। यह सच्चा सामंजस्य विचारशील तर्क-बुद्धि और उन अटल तथ्यों की पहचान के माध्यम से प्राप्त किया जा सकता है जो हमारी वास्तविकता का आधार हैं।

सबद व्याख्या **विनइंदर कौर** और **अमरदीप सिंह**

Oneness In Diversity Research Foundation
वेबसाइट: OnenessInDiversity.com
ईमेल: onenessindiversityfoundation@gmail.com